Raga of the Month September 2026

Raga Maluhakedar राग मलुहाकेदार

राग मलुहाकेदार के नाम से ही स्पष्ट है कि यह केदार का एक प्रकार है। केदार राग में कामोद राग का मिश्रण करके प्रस्तुत राग का सृजन किया गया है। इस रागके नाम मे मलुहा यह नाम जो जोड़ा हुआ है इसका कोई विशेष अभिप्राय नही। मगर मलुहाबिहाग , मलुहाकल्याण आदि रागभी प्रचार में हैं। उनका अध्ययन करने से ऐसा प्रतीत होता है की मलुहा इस नाम में कुछ स्वरवाक्योंका समावेश जुड़ा है; जैसे की, सा रे सा , ध़ प़ म़, या ध़ प़ ध़, म़ प़, प़ ऩि, सा रे सा ।

राग मलुहाकेदार बिलावल थाटसे उत्पन्न होता है। इसमें सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोहमें ऋषभ, गंधार वर्जित हैं, एवं अवरोह संपूर्ण है। अतः इसकी जाती औडव संपूर्ण है। वादी स्वर मध्यम और संवादी षडज है। गायनसमय रात्रि का द्वितिय प्रहर है। सा, म और प न्यास के स्वर हैं। इसका विस्तार मन्द्र और मध्य सप्तक में ही अधिक होता है।

राग मलुहाकेदार के विशेष स्वरसमूह इस प्रकार हैं :-
सा रे सा, ध़ प़ म़, प़ म़ प़ ऩि सा , रे सा, सा म, म रे सा , ऩि ध़ऩि सा रे सा, सा ध़ प़ ध़ म़ प़ म़ प़ ऩि ध़ऩि रे सा, सा, ग म रे सा, म म ग़प, ध म, म प सां रें सां, ध प , म ग म रे सा ।

आजके ऑडिओ में हम पहले पंडित के जी गिंडे जी ने प्रस्तुत किया हुआ लेक्चर डेमोंस्ट्रेशन का अंश सुनेंगे, फिर उन्हीं से दो पारंपरिक रचनाएँ सुनेंगे, उसके पश्चात उस्ताद युनुस हुसैन ख़ाँ ने गायी हुई दो रचनाएँ सुनेंगे।

आभार - पंडित यशवंत महाले, श्री. अजय गिंडे.

01-09-2026.

Link to the list of 180+ “Raga of the month” articles

@ Archive of ROTM Articles https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx